राष्ट्रीय बॉस मिशन द्वारा प्रायोजित BTSG-ICFRE के तत्वाधान में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के कारीगरों एवं किसानों के लिये बांस हस्तशिल्प पर विशेष प्रशिक्षण

दिनांक 23/09/2013 को उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में दिनांक 23/09/2013 से 27/09/2013 तक 05 दिवसीय बॉस हस्तशिल्प प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय बॉस मिशन द्वारा प्रायोजित BTSG-ICFRE देहरादून के तत्वाधान में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य के प्रशिक्षणार्थी जिसमें कृषक, कारीगर एवं वन्यकर्मी सम्मिलित हैं, भाग ले रहे हैं। संस्थान में इस तरह का प्रशिक्षण पूर्व में भी सम्पन्न किया जा चुका है, जिससे अनेकानेक प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए थे। चूँकि बॉस हस्तशिल्प प्रशिक्षण किसानों के लिए कृषि के अलावा आर्थिक लाभ आय का एक उचित साधन बनता जा रहा है। अतः उनके हित को देखते हुए यह प्रशिक्षण कार्यक्रम दोबारा आयोजित किया जा रहा है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के माननीय निदेशक डॉ. यू. प्रकाशम ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने अपने उद्बोधन में प्रशिक्षणार्थियों को बॉस की उपयोगिता एवं इससे नियमित आय कैसे की जाये, इस पर प्रकाश डाला। उन्होंने बतलाया कि विश्व में लगभग 1500 प्रकार की बॉस उपयोगी वस्तुएँ बॉस से निर्मित की जा रही है एवं बॉस के अमूल्य होने के कारण 18 सितम्बर को विश्व बॉस दिवस भी मनाया जा रहा है। हाल ही में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा राज्य बॉस मिशन परियोजना भी शुरू की जा रही है। बॉस में आजीविका की अपार सम्भावनाएँ हैं एवं बॉस

किसी भी प्रकार की मिट्टी में पहाड़ों से लेकर मैदानी भागों तक उगाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बॉस जब जंगल में होता है तो पर्यावरण के हित में कार्य करता है तथा कटने के बाद आर्थिक आय का साधन बनता है। भारत में विश्व का 30 प्रतिशत बॉस पाया जाता है। परन्तु हम केवल 4 प्रतिशत बॉस से ही आमदनी बढ़ाने के सामान जैसे फर्नीचर, सजावटी सामान, घरेलू उपयोग का सामान बना पाते हैं। इसलिए राष्ट्रीय बॉस मिशन बॉस का उत्पादन क्षेत्र बढ़ाने, प्रशिक्षण द्वारा बॉस से बनी सामग्री की गुणवत्ता बढ़ाने और बॉस का बाजार बढ़ाने के लिये संकल्पित है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान बांस बरेली (उ.प्र.) से पधारे प्रशिक्षक श्री मोहम्मद नदीम एवं श्री मुख्तार अंसारी के कुशल मार्गदर्शन में प्रशिक्षणार्थियों को बॉस से फर्नीचर, सजावटी सामान, घरेलू उपयोग का सामान आदि बनाना सिखाया जायेगा। श्री मुख्तार अंसारी एवं श्री नदीम द्वारा विशेष तौर पर उन औजारों के उपयोग पर प्रकाश डाला जाएगा जिनके उपयोग से सामान की सुन्दरता (फिनिशिंग) एवं बाजार मूल्य बढ़ता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में आधुनिक हथियारों से बॉस की सुन्दर, टिकाऊ एवं गुणवत्ता सामग्री तैयार करना, तैयार सामग्री की पैकिंग आदि का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। उद्घाटन के अंत में डॉ. नितिन कुलकर्णी, प्रभागाध्यक्ष, वन विस्तार प्रभाग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। संयोजकों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार प्रशिक्षण के दौरान बनाई गई वस्तुओं की एक प्रदर्शनी दिनांक 27/09/2013 को प्रस्तावित है।

आज दिनांक 27/09/2013 को उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में 05 दिवसीय बॉस हस्तशिल्प प्रशिक्षण का

समापन हो गया। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय बॉस मिशन द्वारा प्रायोजित BTSG-ICFRE देहरादून के तत्वाधान में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य के प्रशिक्षणार्थी जिसमें कृषक, कारीगर एवं वन्यकर्मियों के लिए था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में आधुनिक हथियारों से बॉस की सुन्दर, टिकाऊ एवं गुणवत्ता सामग्री तैयार करना, सामान की सुन्दरता (फिनिशिंग) एवं तैयार सामग्री की पैकिंग आदि का प्रशिक्षण दिया गया। समारोह के दौरान इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न प्रशिणार्थियों द्वारा तैयार की गई बांस की विभिन्न वस्तुओं की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। समापन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. एस. ए. अन्सारी, समूह समन्वयक (अनुसंधान) एवं संस्थान के कार्यालय प्रमुख श्री पी. सुब्रमण्यम (भा.व.से.) द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र वितरित किये गये। मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न अंचलों से आये कृषकों एवं कारीगरों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने संस्थान द्वारा दिये गये हस्तशिल्प संबंधी दुर्लभ जानकारियों के लिए संस्थान का शुक्रिया अदा किया। उन्होंने कहा कि लकड़ी का विकल्प बॉस है, ये लकड़ी प्रदाय करने वाले वृक्ष प्रजातियों की तुलना में शीघ्रता से वृद्धि करता है एवं उन लोगों के लिए जीविकोपार्जन का एक महत्वपूर्ण साधन बनता जा रहा है। उन्होंने टी.एफ.आर.आई द्वारा दिये गये प्रशिक्षण में बॉस लगाने की तकनीक, रख–रखाव एवं उसको काटने के बाद उसके उपचार सम्बन्धित दिये गये ब्याख्यानों के सराहना की एवं संस्थान से समय–समय पर बांस के विभिन्न पहलुओं पर इस तरह के प्रशिक्षण देने हेतु प्रार्थना की।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. एस.ए. अन्सारी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि बाजार में एक बांस का मूल्य औसतन 150–200 रू होता है। यदि हमारे किसान भाई एवं कारीगर एक बांस से हस्तशिल्प विधि द्वारा विभिन्न प्रकार की सजावटी सामग्रियां बनायें तो वे एक बांस से लगभग एक

रू. 1000 से भी अधिक राशि की आय प्राप्त कर सकते हैं। अतः उन्होंने समस्त प्रशिक्षणार्थियों से बांस को अपने जीविकोपार्जन का साधन बनाने की अपील की।

संस्थान के कार्यालय प्रमुख श्री पी. सुब्रमण्यम (भा.व.से.) ने अपने उद्‌बोधन में समस्त प्रशिणार्थियों से संस्थान द्वारा दिये गये प्रशिक्षण को अपने तक ही सीमित न रखते हुए उसे अपने–अपने क्षेत्रों के अन्य किसान, कारीगरों एवं आमजनों तक पहुंचाने का अनुरोध भी किया ताकि बांस हस्तशिल्प से अधिक से अधिक लोग आय प्राप्त कर सकें। समापन समारोह के अंत में डॉ. नितिन कुलकर्णी, प्रभागाध्यक्ष, वन विस्तार प्रभाग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।